

SHRI HANAGAL KUMARASWAMIJI

In the spiritual realm, where nothing can be measured by dimensions, what stands high is a Saint, who left a legacy and a path for all to follow, an enlightened being and as embodiment of love and wisdom, the most revered His Holiness Shri Kumaraswamiji of Hanagal. Swamiji was an exemplar of simplicity and humbleness and was a seer of the future who played a key role in shaping the society. He was a visionary who understood the needs of the society and a true master of life and beyond.

Shri Kumaraswamiji of Hanagal was born on 11th September 1867, into a pious family in Joyisara Haralahalli village which is a part of Haveri District of Karnataka. He was named "Halaiyya" by his loving parents, Shri Basavayya and Smt. Neelamma. Swamiji showed the signs of an extraordinary mystic at a very tender age. He was a brilliant student at school but was more interested in spiritual subjects. By the time he was in 7th grade, his mind had turned completely into spirituality.

With a thirst for the knowledge, Swamiji read various scriptures. He became adept in the most important six scriptures. The wisdom he gained led him to a spiritual transformation inspired him to seek more. Swamiji went to the renowned Siddaroodha Math in Hubli, where he met the enlightened master His Holiness Siddaroodha Swamiji. Under his guidance, he chose the path of renunciation for his spiritual endurance.

Swamiji had received initiation from Yelandoor Basavalinga Shivayogi. However, he prepared himself for 'Anusthana', the process of awakening the inner self which leads to complete enlightenment. For this, Swamiji spent 12 years

meditating and worshipping 'Ishtalinga' in a cave in the hills of Shambhulinga Betta in Kollegala District of Mysuru. He went back to North Karnataka filled with profound love, wisdom and enlightenment.

Shri Kumaraswamiji served the Hanagalla Virakta Math as a monk. India was under the hold of the British then and this had affected the social life of the people in adverse ways. What touched him most was the fact that the children weren't getting enough education. In this context, Swamiji established the All India Veerashaiva/ Lingayat Mahasabha in 1904 and the Shivayoga Mandira in 1909. These institutions were later called "the eyes of Karnataka" for their contribution to the society in the field of education.

During the British reign, he and his disciples set an example by wearing Khadi all the time, thus motivating Indians to choose Khadi.

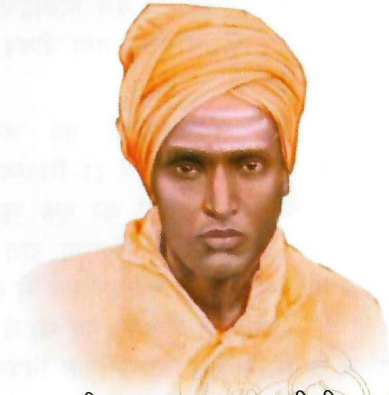
Swamiji's efforts were not only for the humankind but also towards animals and nature. The Goshala established by Swamiji is an organization which aims at the protection and well-being of cows. This dedicated center which started 110 years ago, still runs with the same focus providing shelter for about 500 cows. Swamiji also gave great importance to healthy living. Swamiji made Yoga Compulsory for Sanyasis in his institution. With his efforts reaching all walks of life, Swamiji was sure of his mission and its results.

Department of Posts is pleased to release a Commemorative Postage Stamp on Shri Hanagal Kumaraswamiji.

Credits:-

Text : Based on the material received from proponent
Stamp / FDC / Brochure / : Ms. Alka Sharma
Cancellation Cachet

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA



श्री हानगल कुमारस्वामीजी
SHRI HANAGAL KUMARASWAMIJI

विवरणिका
BROCHURE

श्री हानगल कुमारस्वामीजी

अध्यात्म के क्षेत्र में, आयामों द्वारा कुछ भी मापा नहीं जा सकता। इसमें संत का ही विशिष्ट स्थान होता है। हानगल के श्री कुमारस्वामी ऐसे ही एक महान संत हैं, जिन्होंने हमारे लिए एक समृद्ध आध्यात्मिक विरासत छोड़ी है और हमें संमार्ग दिखाया है। वे प्रेम एवं ज्ञान की प्रतिमूर्ति थे। स्वामीजी सादगी और विनयशीलता के अनुकरणीय उदाहरण थे तथा वे एक ऐसे संत थे जिन्होंने समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे ऐसे दिव्यद्रष्टा थे जिन्होंने समाज की जरूरतों को समझा और वे जीवन तथा जीवन से इतर लोक के सच्चे ज्ञाता थे।

हानगल के श्री कुमारस्वामीजी का जन्म जोइसारा हरलाहल्ली गांव में एक धार्मिक परिवार में 11 सितम्बर, 1867 को हुआ था, जो कर्नाटक के जिला हावेरी का एक भाग है। उनके माता-पिता श्री वसावय्या तथा श्रीमती नीलम्मा द्वारा उनका नाम “हलैय्या” रखा गया था। स्वामीजी में बाल्यावास्था से ही असाधारण रहस्यवाद के लक्षण परिलक्षित होने शुरू हो गए थे। वे पाठशाला में मेधावी विद्यार्थियों में से थे, लेकिन आध्यात्मिक विषयों में अधिक रुचि रखते थे। जब वे 7वीं कक्षा में थे, तभी उनका मन पूर्ण रूप से अध्यात्म की तरफ मुड़ गया था।

स्वामीजी में ज्ञान प्राप्ति की प्रबल इच्छा थी, इसलिए उन्होंने अनेक धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया। उन्होंने छह महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रंथों में दक्षता प्राप्त कर ली। इन धार्मिक ग्रंथों से प्राप्त ज्ञान से इनमें आध्यात्मिक परिवर्तन हुआ, इससे इनमें और अधिक ज्ञान अर्जित करने की अभिप्रेरणा जागृत हुई। स्वामीजी हुबली के प्रसिद्ध सिद्दरूथ मठ गए, जहां पर इनकी भेंट दिव्य ज्योति श्रद्धेय सिद्दरूथ स्वामीजी से हुई। उनके मार्गदर्शन में, उन्होंने अपनी आध्यात्मिक यात्रा के लिए संन्यास के मार्ग का वरण किया।

स्वामीजी ने येलेन्दूर बसवालिंग शिवयोगी से दीक्षा ली थी। तथापि, उन्होंने स्वयं को ‘अनुष्ठान’ के लिए तैयार किया, जो आत्मज्ञान की प्राप्ति की प्रक्रिया है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति में ज्ञानोदय होता है। इसके लिए स्वामीजी ने मैसूर जिले के कोल्लेगला में शम्भूलिंग बेट्टा की पहाड़ियों की गुफा में 12 वर्षों तक चिंतन तथा

‘इस्टलिंग’ की आराधना की। वे प्रेम, ज्ञान तथा प्रबोधन से युक्त होकर कर्नाटक में लौट आए।

श्री कुमारस्वामीजी ने संन्यासी के रूप में हानगल विरक्त मठ में अपनी सेवाएं दी। उस समय भारत में अंग्रेजों का शासन था तथा इससे लोगों का सामाजिक जीवन बुरी तरह प्रभावित था। इसमें उनके हृदय को सबसे अधिक द्रवित करने वाला तथ्य यह था कि बच्चों के पर्याप्त शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे थे। इस संबंध में स्वामीजी ने 1904 में अखिल भारतीय वीराशैव/लिंगायत महासभा तथा 1909 में शिवयोग मंदिर की स्थापना की। ये संस्थाएं आगे चलकर समाज के लिए शिक्षा के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए “आईज ऑफ कर्नाटक” के रूप में विख्यात हुईं।

ब्रिटिश शासन के दौरान, उन्होंने और उनके शिष्यों ने हर समय खादी धारण करके एक उदाहरण स्थापित किया और इस प्रकार उन्होंने देशवासियों को खादी धारण करने के लिए अभिप्रेरित किया।

स्वामीजी के प्रयास न केवल मानवजाति के कल्याण के प्रति समर्पित थे, बल्कि उनमें पशुओं तथा प्रकृति का भी पूरा ख्याल रखा गया। स्वामीजी ने ‘गोशाला’ नामक संगठन की स्थापना की, जिसका उद्देश्य गायों का संरक्षण तथा उनकी देखभाल करना है। यह एक ऐसा कल्याणकारी केन्द्र था जिसकी शुरूआत 110 वर्ष पहले हुई थी और यह आज भी लगभग 500 गायों को संरक्षण प्रदान करता है तथा अपने मूल उद्देश्य के प्रति पूर्णतः समर्पित है। स्वामीजी ने स्वस्थ जीवन को भी महत्वपूर्ण माना है। स्वामीजी ने अपनी संस्था में संन्यासियों के लिए योग को अनिवार्य किया। स्वामीजी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कल्याणकारी कार्यों के प्रति समर्पित थे। वे अपने मिशन तथा इसके सुखद परिणामों के प्रति पूरी तरह आश्वस्त थे।

डाक विभाग श्री हानगल कुमारस्वामीजी पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ : श्रीमती अलका शर्मा
विवरणिका/विरूपण



तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	351590
Stamps Printed	:	351590
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00